डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-चौथा | अगस्त-2010 | मासिक पत्रिका

आप अकेले नहीं हैं
(महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन) 5

सच्चाई
(कबीर साहब की बानी)
(सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज)
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान 9

ध्यान
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों को भजन पर बिठाने से पहले हिदायतें 29

प्रेम-विरह
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के
मुखारविन्द से अनमोल वचन)
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान 31

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 09950 55 66 71 (राजस्थान) व 09871 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-09928 92 53 04, 09667 23 33 04

उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग :** रेनू सचदेवा, ज्याति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 101 | Website : www.ajaibbani.org

कृपाल गुरु आजा संगत पुकार दी

कृपाल गुरु आजा (2), संगत पुकार दी,
तेरे हथ विच चाबी, ओ दाता, सारे संसार दी, (2)

1. संगत पुकार दी है, दोवें हथ जोड़ के,
कित्थे चले गयो दाता, संगत नू छोड़ के, (2)
देंदा रह दिखाली, सदा मेरी ऐ पुकार जी,
तेरे हथ विच.....

2. संगत दे वालिया, देर ना लगावीं वे,
सुण के आवाज साडी, छेती छेती आवीं वे, (2)
दर्शना नू बैठी, संगत तैयार जी,
तेरे हथ विच.....

3. संगत दा वैद्य, तेरे हथ च दवाई वे,
ताला किसे होर लाया, तैं चाबी लाई वे, (2)
जोगे नू बचाया बन, आप पहरेदार जी,
तेरे हथ विच.....

4. नानकी पुकारया, तू झट विच आया सी,
पुकार वाला फुल्का, प्यार नाल खाया सी, (2)
ओसें तरा आजा तूं, मैंनू ना विसार जी,
तेरे हथ विच.....

5. सुनदा पुकार दाता, मुढ़ तों तू आया वे,
मक्खन लुभाणे दा, जहाज बन्ने लाया वे, (2)
संगत नू बचा लै ऐ, पुकार 'अजायब' साध दी,
तेरे हथ विच.....

❋❋❋

महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन

आप अकेले नहीं हैं

गुरु के दिल में अपने बच्चों के लिए अथाह प्यार होता है। ज्यादातर बच्चों पर मिट्टी लगी होती है लेकिन गुरु उन्हें अपने से दूर नहीं करता उनकी गंदगी साफ करता है फिर उन्हें प्यार से अपनी छाती से लगा लेता है। आपको डरने की संदेह करने की जरूरत नहीं आप मजबूत होकर पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ें अगर आप अपना चेहरा गुरु की तरफ रखेंगे तो आपको जरूरत अनुसार मदद और सुरक्षा मिलेगी।

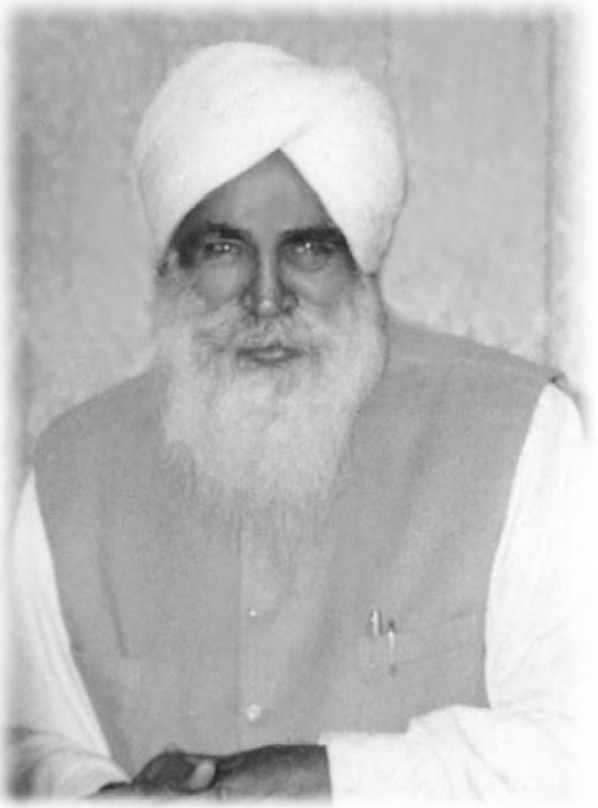

गुरु के सुरक्षा करने वाले हाथ हमेशा नामलेवा के ऊपर होते हैं। **आप अकेले नहीं हैं,** आपके साथ कोई है जो आपकी चिंता और अंधेरेपन के बोझ को हटा सकता है। आप सब कुछ पीछे छोड़कर प्यार, शान्ति और स्थिरता से आगे बढ़ें।

इतिहास बताता है कि गुरु की मदद के बिना कभी कोई सही रास्ते पर नहीं चल पाया। यह एक मौलिक नियम है कि गुरु की मदद के बिना कोई भी

अंदरूनी पर्दा नहीं खोल सका अगर कोई ऐसा कर सकता है तो उसे प्रयत्न करने दें और देखें! वह ऐसा कर पाता है या नहीं? पिछले उदाहरणों से पता लगता है यदि किसी के पास अपना कुछ तजुर्बा है फिर भी उसे आगे के पथ पर बढ़ने के लिए किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

जिन प्रेमियों को 'नामदान' मिल गया है उन्हें प्रेम-प्यार से अपना भजन-सिमरन करते रहना चाहिए जिससे वे दिन-प्रतिदिन अंदर से तरक्की कर सकें और अंदरूनी दया का आनन्द ले सकें।

जिस तरह गर्मी के मौसम में बर्फ के नजदीक पहुँचने पर ठंडक महसूस होती है, इत्तर की दुकान के नजदीक पहुँचने पर भीनी-भीनी खुशबू महसूस होती है उसी तरह जैसे ही हम गुरु के संपर्क में आते हैं हमारे मन को शान्ति मिलती है और परमात्मा की दया महसूस होती है। यह शान्ति रेगिस्तान में हरियाली की तरह है। गुरु को परमात्मा की तरफ से काम सौंपा गया है जिसे वह प्यार से निभाता है।

आप अकेले नहीं हैं गुरु ताकत हर समय आपके सिर पर है। गुरु को अपने बच्चों की जरूरतों का ज्ञान होता है। हमें एक-एक करके अपने ऐब छोड़ देने चाहिए गुरु अंदर से हमारी मदद करता है। इस कोशिश में समय लग सकता है लेकिन कामयाबी अवश्य मिलेगी।

शब्द बयान किए जा सकते हैं लेकिन गुरु की जुबान मूक होती है। हमें अपने गुरु के आनन्द को महसूस करना चाहिए। **आप अकेले नहीं हैं**, आप हमेशा मेरे मन में हैं।

गुरु ताकत इस दुनिया के अंत होने तक आपको नहीं छोड़ेगी। विरह की आग आँसुओं से नहीं बुझाई जा सकती। गुरु की मीठी याद में बहाए गए आँसू आपको उसके और नजदीक ले जाएंगे। जिस तरह पेड़ पर लगे फूलों से फल बन जाते हैं उसी तरह अगर आप गुरु को अपने मन में रखते हैं तो स्वाभाविक ही आप उसके मन में हैं।

गुरु का प्यार अपने बच्चों के लिए कभी कम नहीं होता। यह उस बच्चे की बदकिस्मती है जो अपने हृदय के द्वार बंद कर लेता है वह गुरु के प्यार को अपने अंदर नहीं देख सकता। प्यारा पिता जब बच्चे का मुँह अपनी तरफ देखता है तो उसे दया का आनन्द देकर ही खुश होता है। गुरु की डोर लम्बी है वह डोर ढ़ीली तो जरूर कर देता है लेकिन अपने हाथ से नहीं छोड़ता।

गुरु बाहरी और अंदरूनी मंडलों के मार्गदर्शन की विधि को बढ़ाता है। हर किसी को आजादी है कि वह उसके पास आए जैसे एक बच्चा मुसीबत आने पर दौड़कर अपने पिता के पास आता है; जब भी जरूरी होता है पिता बच्चे की सहायता करता है। अनुशासित नामलेवा सिर्फ अपना ही बेहतर भविष्य नहीं बनाते बल्कि दूसरों के लिए भी एक उदाहरण बन जाते हैं।

रोशनी को छुपाकर नहीं रखना चाहिए। रोशनी को प्यार के साथ इस तरह रखना चाहिए कि वह सत्य की खोज करने वालों का ध्यान आकर्षित कर सके। जब हम परमात्मा की फौज में शामिल हो गए हैं तो हमें सही दिशा की ओर चलना चाहिए। हमें अपने जीवन को अच्छी सोच, दया भरे शब्द और अच्छे कर्मों से भरना चाहिए।

जब कोई बुरा सोचता या बुरे कर्म करता है उस समय बुराई की शक्ति प्रबल होती है। जो परमात्मा को पाना चाहते हैं उन्हें अच्छी सोच, अच्छे शब्द और उत्तम कर्मों का घी डालना चाहिए। अच्छे इंसान का धर्म है कि वह अपने दुश्मन से भी प्यार करे और उसे अपना दोस्त बना ले; पापी को सही रास्ता बताए और विवेक की रोशनी फैलाए।

पूर्ण गुरु द्वारा दिया गया 'नाम' एक ताकत है उस नाम में देने वाले की ताकत काम करती है। गुरु शरीर नहीं परमात्मा की ताकत है जो परमात्मा द्वारा चुने गए इंसानी पोल पर काम करती है।

❋❋❋

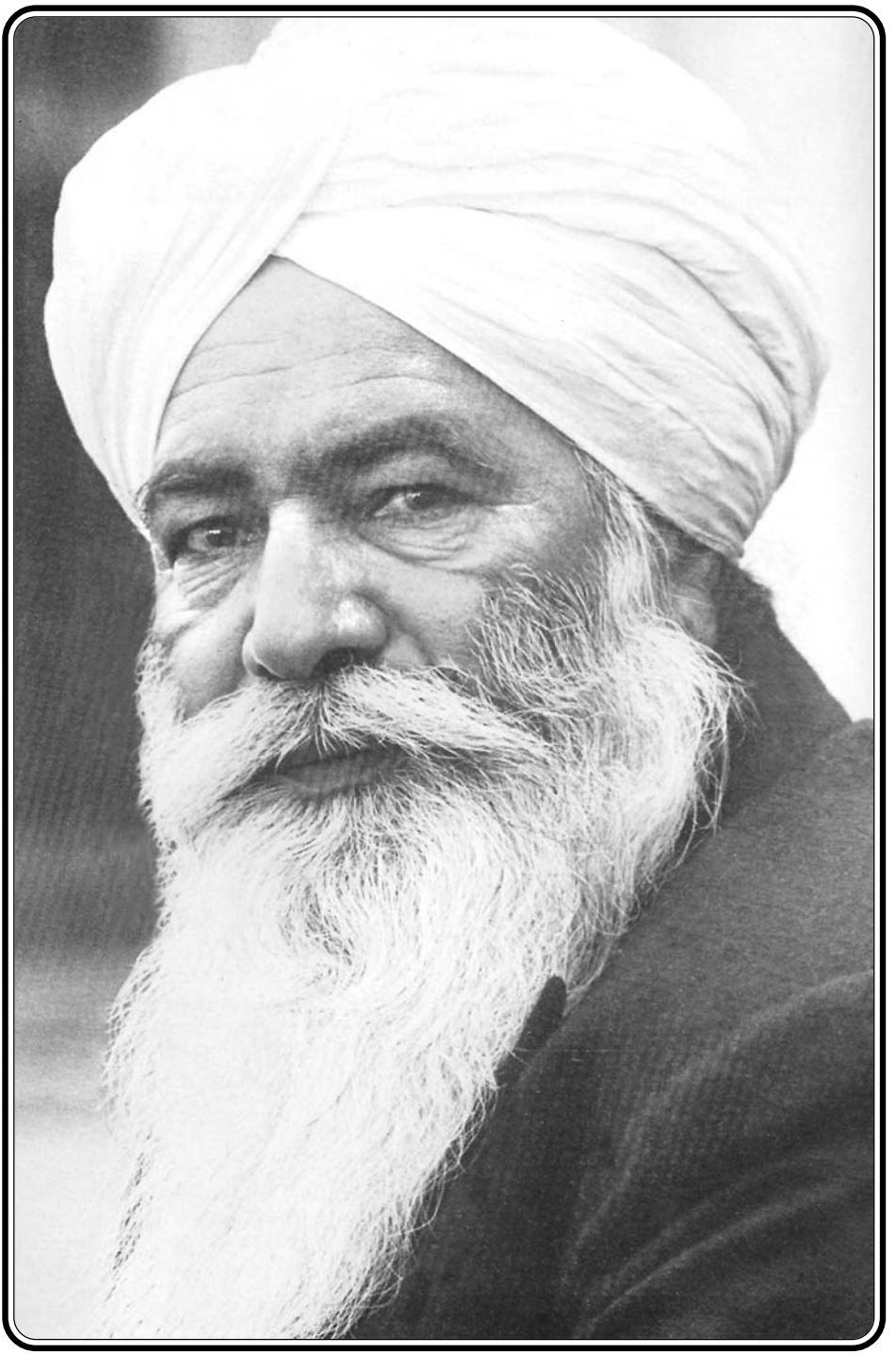

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्चाई

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

हर रोज की तरह आपके आगे कबीर साहब की बानी रखी जा रही है। इस बानी में कबीर साहब हमें बहुत प्यार से समझाएंगे कि हमें धर्मग्रन्थों को बहुत सोच-समझकर पढ़ना चाहिए। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्त-महात्मा एक शीशा होते हैं अगर हम शीशे में हँसता हुआ चेहरा देखेंगे तो हँसता हुआ नजर आएगा अगर रोता हुआ चेहरा देखेंगे तो रोता हुआ नजर आएगा; इसमें शीशे का कोई कसूर नहीं होता यह अपने ही चेहरे का कसूर होता है।''

इसी तरह जब हम सन्त-महात्माओं की संगत-सोहबत में जाते हैं उनके धर्मग्रन्थों को पढ़ते हैं तो वे धर्म-ग्रन्थ शीशे का काम करते हैं, हमें **सच्चाई** की समझ आती है। मैं कहा करता हूँः

पढ़या इल्म अमल न कीता, पढ़या फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी न गँवाई, मत्था फेर घिसाया की।

हमने धर्म-ग्रन्थ पढ़े, भोग डाले, भाई-चारा इकट्ठा किया; खून-पसीने का पैसा खर्च किया अगर फिर वही शराब-कबाब, इन्द्रियों के भोग, दिल के अंदर ईर्ष्या है और बुरी आदतों को नहीं छोड़ा तो उस पढ़ने का क्या फायदा? सन्त-महात्मा पढ़ने को बुरा नहीं कहते लेकिन हम जिस तरीके से पढ़ते हैं उसे बुरा कहते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''हम जो कुछ इन आँखों से देखते हैं भाई-बहन, यार-दोस्त, कुल-कुटुम्ब ये सब काल ने हमारे आगे चोगे (भ्रम) बिखेरे हुए हैं; ये सब मतलब के मित्र हैं।'' हमारा जातिय तजुर्बा है कि जब तक हमारी सेहत ठीक है या हमारे रिश्तेदारो, भाई-बहनों की हमसे कोई गर्ज पूरी होती है वे तब तक हमारे साथ प्यार करते हैं,

हमें विश्वास दिलाते हैं कि मैं तेरे बिना नहीं रह सकता, तू ही सब कुछ है लेकिन जिंदगी का यह भी तजुर्बा है कि जब उन्हें पता लग जाए कि इससे अब हमारी कोई गर्ज पूरी नहीं हो सकती तो उनका जोश ठंडा पड़ जाता है। सन्त कहते हैं, ''इस चोगे को अनेकों ही चुग गए हैं, तू क्या सोच रहा है? असलियत को समझ कि **सच्चाई** क्या है?''

किसी प्रेमी ने कबीर साहब से सवाल किया, ''महाराज जी! फलाना आदमी बहुत बड़ा पुजारी बना हुआ है। उसने ऊँचे-ऊँचे भवन बनाए हुए हैं, उसका डेरा बहुत बड़ा है।'' कबीर साहब ने कहा, ''देख प्यारेया! न ये भवन साथ जाएंगे और जो लोग वहाँ बैठकर हास्यरस कर रहे हैं ये हास्यरस भी उनके साथ नहीं जाएगा। ऐसे सुख से तो भिक्षा माँगकर खा लेनी अच्छी है अगर हमारा ख्याल परमात्मा के साथ जुड़ा रहे कम से कम हम और पाप तो नहीं चढ़ाते।''

कोई सन्त रात के समय एक गाँव में दाखिल हो रहा था उस समय उस नगर का राजा भेष बदलकर यह देख रहा था कि रात को उसके राज्य में क्या हो रहा है? राजा का उस सन्त के साथ मिलाप हुआ। राजा ने सन्त से पूछा कि तू कौन है, रात कहाँ काटेगा? सन्त ने कहा, ''मैं परमात्मा को याद करने वाला फकीर हूँ।'' राजा ने कहा कि मेरा घर अच्छा है तू मेरे साथ चल मैं तुझे सुख आराम दूँगा।

सन्त ने कहा, ''अगर सुख-आराम लेने होते तो मैं अपने घर पर ही रहता, मैं परमात्मा के नाम पर फकीर हुआ हूँ। मैं यहाँ भट्ट पर ही रात गुजार लूँगा।'' आज भी कई गाँवों में भट्ट हैं। वह सन्त भट्ट में गया जब तक नींद नहीं आई उसने परमात्मा की भक्ति की, थक जाने पर नींद अच्छा बिस्तर नहीं देखती; सोने के बाद सब एक जैसे हो जाते हैं चाहे राजा है या गरीब है! सन्त जागते हुए 'शब्द-नाम' में जुड़ा रहा। बहुत सर्दी थी पाला पड़ रहा था। राजा ने सोचा! वह फकीर सर्दी के पाले से अकड़कर मर गया होगा। सुबह राजा ने सन्त के पास अपना आदमी भेजा। उस आदमी ने सन्त से कहा कि आपको राजा ने बुलाया है।

सन्त ने कहा, ''मेरा दिल राजदरबार में जाने के लिए नहीं करता क्योंकि साधु राजदरबार में तीन चीजों के लिए जाता है अगर उसे माया की भूख है कि यह अमीर आदमी है कुछ देगा! मान-बड़ाई की भूख है कि लोग मेरा मान करेंगे! या ऐश-इशरत के लिए जाएगा लेकिन मुझमें ये तीनों चीजें नहीं हैं।'' आखिर जब साधु राजा के पास पहुँचा तो राजा ने पूछा, ''सुनाओ सन्त जी! रात कैसी गुजरी?''

साधु ने हाथ जोड़कर कहा, ''महाराज जी! कुछ तो आप जैसी गुजरी और कुछ आपसे अच्छी गुजरी।'' राजा बहुत परेशान हुआ कि इसकी रात मेरी तरह और मुझसे अच्छी कैसे गुजरी? साधु ने कहा कि आपसे अच्छी तो वह थी कि सर्दी लगने के कारण मुझे नींद नहीं आई मैं परमात्मा के साथ जुड़ा रहा। जब मैं सो गया तो आपकी तरह हो गई क्योंकि मखमल के बिस्तर पर सोते हुए आपको क्या पता था कि मैं कहाँ पड़ा हूँ और रेत पर सोने के बाद मैं भी आपकी तरह ही हुआ।

ऊच भवन कनकामनी सिखरि धजा फहराइ।
ता ते भली मधूकरी संत संग गुन गाइ।।

कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइ।
राम सनेही बाहरा जम पुरु मेरे भांइ।।

आमतौर पर हम लोग थोड़े बहुत पैसे जोड़कर सैर करने के लिए चल पड़ते हैं कि फलाना शहर बहुत अच्छा है। अब लोग शहरों से भी ऊपर उठ गए हैं कहते हैं कि इंग्लैंड बहुत अच्छा है। अमेरिका वाला कहता है अगर तू अमेरिका देखे! वह तो बिल्कुल ही स्वर्ग है। कहने का भाव यह है कि हम सैर तमाशों में पड़ गए है **सच्चाई** को नहीं ढूंढ रहे।

कबीर साहब कहते हैं कि शहर से वह उजाड़ जगह भी अच्छी है जहाँ कोई परमात्मा की भक्ति कर रहा है। जिस जगह कोई परमात्मा की भक्ति नहीं करता चाहे! वह कितना ही सुंदर शहर क्यों न हो वह उस जगह से भी ज्यादा उजाड़ है।

कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुंन के घाट।
तहा कबीरै मटु कीआ खोजत मुनि जन बाट।।

कबीर साहब उस प्रेमी से कहते हैं कि देख प्यारेया! मेरा निवास उस जगह है जिसे ऋषि-मुनि, योगीजन सदा ही खोजते रहे रातें जागते रहे लेकिन उस जगह को पा नहीं सके।

इड़ा पिंगला और सुखमना तीन बसे इक थांई।

कबीर साहब कहते हैं जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियां इकट्ठी होती हैं उसे प्रयाग राज कहते हैं। स्थूल पर्दे के अंदर सूक्ष्म और सूक्ष्म के अंदर कारण पर्दा है। जब हम ये तीनों पर्दे उतार लेते हैं दसवें द्वार में बैठक बन जाती है वहाँ औरत-मर्द का भिन्न भेद खत्म हो जाता है। हमारी जन्म-जन्मांतरो से सोई हुई आत्मा जाग जाती है, इसे पता लगता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है। उस समय सच्ची तड़प सच्चा प्यार जागता है; वहाँ पहुँचकर पता चलता है कि यह देश कितना सुंदर है।

कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि।
हीरा किस का बापुरा पुजहि न रतन करोड़ि।।

आप प्यार से कहते हैं जैसे यह बच्चा माँ के पेट से पैदा हुआ है अगर इसने देह विषय-विकारों में न लगाई हो तो आप देखें! 'नाम' की चढ़ाई कितनी जल्दी होती है फिर उस हीरे का कितना मूल्य पड़ता है? करोड़ो रत्न भी उस हीरे की कीमत नहीं लगा सकते। जिस तरह पेड़ पर लगे हुए फल को आंधी तूफान मिले तो वह कमजोर हो जाता है। कबीर साहब एक जगह कहते हैं:

जैसी लौ पहले लगी तैसी निबहे ओड़।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।

जैसी लगन माता के पेट में होती है अगर ऐसी ही लगन बाहर आकर गुरु के साथ लग जाए, उतार-चढ़ाव न आए, सुख की माँग न

करें, दुखों से न डरें, कर्मों के भोग को प्रालब्ध समझकर भोग लें। गुरु जो रास्ता बताता है उस पर चले तो उसके लिए अपना उद्धार करना क्या मुश्किल है वह और भी करोड़ो आदमियों का उद्धार कर जाता है।

कबीरा एकु अचंभउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ।
बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ।।

कबीर साहब अपनी संगत में बहुत प्यार से संदेश दे रहे हैं, ''प्यारेयो! मैंने एक बड़ा ही अचम्भा देखा है कि हीरा दुकानों में बिक रहा है। मनुष्य जन्म हीरा है और दुकानें योनियां हैं यह कभी किसी योनि में जाता है तो कभी किसी योनि में जाता है। हम इस जामें में बैठकर 'शब्द-नाम' का व्यापार करने के लिए आए है लेकिन विषय-विकारों में पड़कर हम जिन योनियों से आए हैं उन्हीं में जाकर फिर धक्के खाते हैं।'' गुरु साहब प्यार से कहते हैंः

कई जन्म भए कीट पतंगा कई जन्म गज मीन करंगा।

गुरु अर्जुनदेव जी ने अंदर देखा फिर उन्होंने हमें बाहर लिखकर बता दिया कि आप यह ख्याल ही छोड़ दें कि हम इंसान के बाद इंसान बनेंगे। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हो सकता है हमारा जन्म किसी ऐसी जगह हो जाए जहाँ हम भूले-भटके भी परमात्मा की तरफ न आ सकें!'' हम इंसान बनकर भी देख रहे हैं जब किसी का हाल पूछते हैं कि तेरा क्या हाल है? तब सुनकर पता लगता है कि इसके जितना दुखी और कौन है? दुनिया में कोई भी सुखी नहीं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

नानक दुखिया सब संसार।

कबीर साहब कहते हैं कि मैंने सारी दुनिया का विवेक बुद्धि से निर्णय किया है कि इस दुनिया में कोई भी इंसान सुखी नहीं है। हम अहंकार में आकर कह देते हैं कि हम सुखी हैं। उस सुख का पता नहीं कि दो मिनट के बाद यह सुख किस दुख में तबदील हो जाएगा? हँसते-

खेलते हैं, घर में आनन्द कारज हो रहे होते हैं उसी घर में किसी आदमी का दिल फेल हो जाता है खुशियां दुख में बदल जाती हैं। 'नाम' का व्यापार किए बिना इंसान अपना हीरा जन्म विषयों में गँवा रहा है।

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु।
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''जिस हृदय में धर्म है वहाँ परमात्मा जरूर प्रकट होता है। जहाँ क्षमा है वहाँ परमात्मा बिना बुलाए ही आ जाता है। जहाँ झूठ है वहाँ पाप है क्योंकि झूठ का बाप पाप है। जहाँ लोभ है वहाँ काल है। जहाँ पदार्थों की तृष्णा लगी हुई है वहाँ काल अपने आप ही आ जाता है अगर हम सिमरन करें 'नाम' जपें तभी हम इन बुराईयों से बच सकते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी के समय में कुछ सेवादारों की आपस में बेइत्तफाकी हुई, उनके दिलों में काफी फर्क आया। महाराज सावन ने अपने एक सेवक से कहा कि तू इसे क्षमा कर दे लेकिन वह उसे माफ करने के लिए तैयार नहीं हुआ। आपने दूसरे सेवक से कहा कि इसके पास तो माफी नहीं है तू ही इसे माफ कर दे। सन्त जानते हैं कि क्षमादान हम तभी कर सकते हैं जब परमात्मा ने हमारे अंदर क्षमा रखी हो। क्षमा हर हृदय में आकर नहीं टिकती।

कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ।
मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ।।

कई राजपूत राजा वीर सिंह, बघेल सिंह, पीपा कबीर साहब के नामलेवा थे। एक राजा के पास एक सन्त रहता था जिसकी यह बड़ाई थी कि उसे छह महीने के लिए एक मकान में बंद कर दें तो वह अन्न नहीं खाता था पानी नहीं पीता था। उस सन्त की इस बड़ाई की वजह से वह राजा उसकी तरफ आकर्षित हुआ और साथ ही प्रजा भी उसकी तरफ आकर्षित हुई। जब छह महीने बाद वह सन्त बाहर निकलता

मुनियादी होती बाजे बजाए जाते आतिशबाजी चलती सारे शहर में जलूस निकाला जाता उस सन्त की जय-जयकार होती इसके बाद वह फिर से अंदर चला जाता।

राजा ने कबीर साहब के पास जाकर यह बात बताई तो कबीर साहब ने कहा, ''राजा जी! मैं आपकी बात को बुरा नहीं कहता लेकिन इस युग में प्राण अन्न में हैं; **सच्चाई** यह है कि वह कोई न कोई खुराक जरूर खाता है।'' राजा मानने के लिए तैयार नहीं हुआ।

छोडे अन्न करे पाखंड न वह सुहागन न वह रंड।

कबीर साहब दिलों की जानते थे। कबीर साहब ने राजा से कहा कि तुम यह मुनियादी करवा देना कि इस बार सन्त जी एक सप्ताह देर से बाहर आएंगे। राजा ने उसी तरह किया। सन्त ने तो अपने समय पर बाहर आना ही था। जब सन्त जी बाहर आए कोई बाजा नहीं बजा गले में हार नहीं डाले गए इतर नहीं छिड़का गया जय-जयकार नहीं हुई क्योंकि लोगों को सूचना एक सप्ताह बाद की दी हुई थी। अपना इस तरह का अपमान देखकर सन्त ने वहीं प्राण त्याग दिए।

मान भी इसी तरह है जैसे किसी साहूकार को घाटा पड़ जाता है टेलिफोन कान के साथ ही लगा रह जाता है उसका हार्ट फेल हो जाता है। मानी आदमी की भी यही हालत होती है। आदमी बाहर से तो माया छोड़ सकता है लेकिन अंदर की माया छोड़नी बहुत मश्किल है; अंदर की माया का जाल सबसे बड़ा है।

मोटी माया सब तजे झीनी तजी न जाए।

सन्त-महात्मा हमें सतसंग में करप्शन से बचने के लिए कहते हैं। बाहर की जिंदगी में मर्द को अपनी पत्नी पर और पत्नी को अपने पति पर सब्र करना चाहिए। इसकी वजह यह है अगर मर्द मिट्टी की औरतो पर या औरतें मिट्टी के मर्दों पर अपना दीन-ईमान खत्म कर सकती हैं तो जब हम आगे जाएंगे मर्दों को नूरी औरतें और औरतों को नूरी मर्द

मिलेंगे क्योंकि काल ने सब जगह फंदे लगाए हुए है। काल के फंदे कहते हैं कि तू आगे क्यों जाता है यहाँ सुख भोग हम तुझे राजा-महाराजा बना देंगे तब वह इंसान अंदर कैसे कामयाब होगा? सिर्फ नोट ही नहीं ये सब माया के पदार्थ हैं। सज्जनों! हम जो कुछ आँखों से देखते हैं यह सब माया का ही पसारा है।

कबीर साचा सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु बाहिआ एकु।
लागत ही भुइ मिलि गइआ परिआ कलेजे छेकु।।

कबीर साहब का एक शिष्य आपके पास आकर फरियाद करता है कि महाराज जी! आपको हर किस्म का आदमी मिलने के लिए आता है कोई आपके साथ बहस करता है तो कोई श्रद्धा लेकर प्यार करने आता है लेकिन आप किसी के ऊपर गुस्सा नहीं होते जो कोई सवाल लेकर आता है आप उसे प्यार से जवाब देते हैं, आपके अंदर यह गुण कैसे उत्पन्न हुआ?

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे कभी यह नहीं कहते कि हम कुछ हैं या हम इस गुण को प्राप्त कर सके। आज तक सभी सन्तों ने अपने गुरु की महिमा गाई है क्योंकि सन्त को बनाने वाला उसका गुरुदेव ही होता है अगर गुरुदेव न मिलता वह अपने 'नाम' के साथ न जोड़ता अपने घर सच्चखंड का न्यौता न देता हम किस बाग की मूली थे? यहाँ अनेकों ही आए और चले गए।

कबीर साहब कहते हैं कि मुझे गुरु मिले उन्होंने 'नाम-शब्द' का भेद दिया उन्होंने इस तरह 'शब्द' का बाण मारा जो सीधा मेरे कलेजे में लगा, यह बाण लगने से मैं जमीन पर गिर गया। यह बाण मेरे कलेजे में छेद कर गया। अब मैं किसके साथ लडूं! या यह देखूं कि कोई मेरे साथ बहस करने के लिए आया है। मुझे दोस्त और दुश्मन दोनों एक ही दिखाई देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दूजा होय सो अवरो कहिए।

परमात्मा ने कोई और बनाया हो तो हम उसके साथ लड़ाई झगड़ा करें। गुरु नानकदेव जी तो यहाँ तक कहते हैं:

मंदा किसनू आखिए शब्द देखो लिव लाए।
बुरा भला तिच्चर आखदे जिच्चर है दो माहे।

जब तक हम दुविधा में फँसे हुए हैं तब तक ही एक-दूसरे को अच्छा-बुरा कहते हैं। एक-दूसरे के समाज को भला-बुरा कह रहे हैं लेकिन जब अंदर जाते हैं तो पता लगता है कि परमात्मा सबका दाता है सबका बादशाह है। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

अंतर प्यास उठी प्रभ केरी, सुण गुरु वचन मन तीर लगइऐ।

आप भी कबीर साहब की तरह अपनी हालत बयान करते हैं कि जब मेरे दिल में परमात्मा से मिलने की विरह और तड़प पैदा हुई तो मैंने परमात्मा को जंगलों, पहाड़ो, मंदिरो सब जगह खोजा लेकिन जब मैं घूमता-घूमता गुरु अमरदेव जी महाराज के पास पहुँचा तो उन्होंने कहा, ''तू बाहर क्या ढूंढता है? बाहर तो मिट्टी और पानी है। हमारी सब धर्मपुस्तकें कागजों की बनी हुई हैं। प्यारेया! परमात्मा तो तेरे अंदर बैठा है।'' आपने अंदर तवज्जो दी जब अंदर वह मन मोहनी मूरत देखी तो उनका वचन तीर की तरह घाव कर गया।

हौं आकल विकल भई गुरु देखी हुण लोटपोट होई पईऐ।

मैंने जब अंदर जाकर मनमोहनी मूरत देखी तो मैं वहीं लोटपोट हो गया। जो अंदर गए वही कहते हैं कि गुरु के वचन तीर की तरह लगते हैं तभी हमारी जिंदगी पलटती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि हमें हर रोज सतसंग सुनना चाहिए फिर आप कहते कि कोई ऐसा आदमी है जो बीस रूपये देकर हमें सतसंग सुना दे लेकिन यह तो रोजगार हो गया। कोई मुफ्त की सेवा करने वाला महात्मा मिले जो हमें हमारी कमियां बताता रहे। पता नहीं महात्मा के किस शब्द ने हमारी जिंदगी पलटकर रख देनी है!

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक।
अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक।।

एक बार महाराज जी गंगानगर में सतसंग दे रहे थे। आपने कहा, ''रातें जागें, मेहनत करें, कम खाना खाएं, स्वादु न बनें, कम से कम तीन-चार घंटे भजन करें अगर आप पाँच घंटे अभ्यास करेंगे तो भी दुनिया की बातों का पलड़ा भारी रहेगा।'' सबके सिर नीचे थे फिर आपने कहा कि बैठें जरूर चाहे पाँच मिनट ही बैठें। उस समय सब लोगों ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया कि यह आसान है।

उस प्रेमी ने कबीर साहब से कहा, ''आप मुझे गुरु मिल गए हैं अब मुझे कुछ करने की जरूरत नहीं।'' कबीर साहब उसी प्रेमी को समझाते हैं कि वह बाण प्रेमी श्रद्धालु को लगता है। गुरु कहता है, ''तू विषय-विकारों से बच, मेहनत कर अपनी जिंदगी को पवित्र बना और ईमानदारी से 'नाम' जप।''

आप कहेंगे कि हम ईमानदारी से बैठते हैं। प्यारेयो! आपका मन यहाँ भी आपके साथ चालाकी मारता है। यहाँ भी आशा लगाता है कि मुझे यह मिले! वह मिले! जबकि हमारी प्रालब्ध के मुताबिक सब कुछ ही मिलना है। गुरु बहुत दयावान होता है उसे पता है कि मैंने ही सेवक की जिंदगी बनानी है।

भूले सिख गुरु समझाए औजड़ जान्दे मार्ग पाए।

इसमें गुरु का क्या कसूर हो सकता है अगर सिख के अंदर चूक है वह विषय-विकारों में ही फँसा हुआ है। गुरु थोड़ी देर के लिए डोरी जरूर ढ़ीली कर देता है लेकिन हाथ से नहीं छोड़ता।

गुरु गोविंद सिंह जी का इतिहास पढ़कर देखें! जब आपके नामलेवा शिष्य यह लिखकर रख गए कि तू हमारा गुरु नहीं हम तेरे शिष्य नहीं। गुरु गोविंद सिंह जी ने आनन्दपुर में सब कुछ छोड़ दिया। जब मुक्तसर साहब आए उस समय के राजा ने जो फौजे भेजी थी उन शिष्यों ने उन

फौजों से मुकाबला किया जिसमें सारे शिष्य मारे गए सिर्फ दो प्रेमी-माता भागो और भाई महा सिंह ही बचे।

गुरु गोविंद सिंह जी ने भाई महा सिंह से कहा, ''मैं तुम्हारी सेवा से खुश हूँ। क्या माँगते हो क्या दुनिया का राजपाट या सुख चाहते हो?'' शिष्यों ने कहा कि हम आपसे कुछ नहीं माँगते आप सिर्फ हमारी टूटी हुई बाँध दें। गुरु गोविंद सिंह जी ने फिर कहा, ''महा सिंह! गुरु नानकदेव जी का दरबार खुला है तू माँग क्या माँगता है? आपने वह कागज जेब से निकालकर कहा कि इसमें तुम्हारे दस्तखत हैं कि तू हमारा गुरु नहीं लेकिन मैंने तो इस पर यह नहीं लिखा कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु नर्क में भी सेवक को नहीं छोड़ता।'' तुलसी साहब अपनी बानी में कहते हैं:

अब नानक की साख सुनाऊं सोदर पौड़ी में समझाऊँ।

आप गुरु नानकदेव जी की बानी पढ़कर देखें! आप अपने शिष्यों की खातिर नर्क में जाकर नर्क खाली कर आए थे। राजा जनक की बानी पढ़कर देखें! आपने भी नर्कों के कुंड खाली कर दिए थे।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह सतसंग में एक प्रेमी की कहानी सुनाया करते थे कि वह नर्क में चला गया। बाबा जयमल सिंह ने आपसे कहा, ''तू उस आत्मा को ले आ।'' आपने उस आत्मा को आवाज दी, ''क्या तुझे सिमरन याद है?'' उस आत्मा ने कहा, ''नहीं।'' फिर उस आत्मा से पूछा क्या तुझे मेरी आवाज सुनाई दे रही है? उस आत्मा ने कहा, ''हाँ।'' आपने कहा तू मेरी आवाज को पकड़कर ही आ जा। उस आत्मा ने कहा अब मुझे सिमरन भी याद है गुरु स्वरूप भी आ गया है।

प्यारेयो! गुरु और शिष्य का बड़ा अटूट रिश्ता है। शिष्य का फर्ज है कि अलग-अलग शरीरों में रहते हुए गुरु से एक ज्योत बनकर रहे।

कबीर है गै बाहन सघन धन छत्रपती की नारि।
तासु पटंतर ना पुजै हरि जन की पनिहारि।।

सभी सन्त बीबीयों से कहते हैं कि तुम बेटियां बनकर सतसंग में आओ, इसे अपना मायका घर समझो। कबीर साहब के पास कोई औरत हार-श्रृंगार लगाकर आई वहाँ पास में और भी प्रेमी बैठे थे। उन प्रेमियों ने कहा, ''इस औरत के कितने अच्छे कपड़े हैं यह तो किसी अमीर घर की है।'' कबीर साहब के यहाँ एक सेवादारनी थी जो रोज वहाँ झाड़ू लगाती थी उसके कपड़े भी अच्छे नहीं थे। कबीर साहब ने कहा, ''यह औरत इस सेवादारनी के भी बराबर नहीं।''

पाकिस्तान में लासूड़ी शाह अच्छी कमाई वाला फकीर हुआ है। लायलपुर में कोई आदमी वोटो के लिए खड़ा हुआ तो उसके दिल में ख्याल आया कि बाबा जी से आर्शिवाद ले आएं। वह आदमी लासूड़ी शाह के पास आया। लासूड़ी शाह ने अपने एक सेवक से कहा, ''तू कह दे कि यह जीत जाएगा।'' सेवक ने कहा कि मेरे पास क्या है जिससे मैं इसे जितवा दूंगा। लासूड़ी शाह ने कहा, ''तू कह दे कि यह जीत जाएगा।'' सेवक ने उसी तरह कह दिया और वह जीत गया। जब जीतकर आया तो उसकी चटक-मटक और ही थी। उसने सिर पर तुल्ला रखा हुआ था चौड़ा कुर्ता पहन रखा था और दोनों जेबों से रूमाल बाहर लटक रहे थे। यह देखकर सेवक ने कहा कि अब तो इसकी बहुत चटक-मटक है। लासूड़ी शाह ने कहा, ''यह चटक-मटक तेरे जूतो की तरह भी नहीं है क्योंकि यह चार दिन की है।''

उस सेवक ने फिर सवाल कर दिया जिस तरह पश्चिम के अंग्रेज मुझसे सवाल कर देते हैं। मैं जो जवाब देता हूँ उसमें से फिर सवाल कर देते हैं। वह ऐसा ही सेवक था कभी-कभी सेवक अपनी शंका इसी तरह निकालते हैं। सन्त जवाब देते हुए नहीं घबराते ठंडे दिल से जवाब देते हैं। सेवक ने कहा कि आपने सेवादारनी की तो प्रशंसा कर दी लेकिन नृप नारी की निंदा क्यों की है? अब कबीर साहब फर्क बताते हैं:

कबीर ब्रिप नारी किउ निंदीऐ किउ हरि चेरी को मानु।
ओहु मांग सवारै बिखै कउ ओहु सिमरै हरि नामु।।

कबीर साहब कहते हैं परमात्मा की सेवादारनी पानी भरने वाली अगर कमाई नहीं करती फिर भी रोज सतसंग सुनती है सन्तों के दर्शन करती है विषय-विकारों से बची रहती है। अमीर घर में पैदा हुई औरत जब हार-श्रृंगार लगाती है तब इसकी तवज्जो विषय-विकारों में फँसी होती है। इसकी तवज्जो चौबिस घंटे उस तरफ रहती है, जितनी आशा उतनी ही बर्बादी। गुरु साहब कहते हैंः

भोगो रोग से अंत बिगोवे आए जाए दुख पाऐन्दा।

कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर।
कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर।।

जिस तरह ज्यादा बारिश होने पर मकान गिरने लगता है तो हम उसके नीचे खम्बे लगा देते हैं उसकी कुछ मुनियाद बन जाती है। हम जीवों की यही हालत थी विषय-विकार हर तरफ से छेद करके अंदर घुस रहे थे उनकी आशा पूरी करने के लिए हम भी गिर रहे थे। सतगुरु ने हमारे अंदर 'नाम' का खम्बा लगाया तो हम डूबने से बच गए। सतसंग में आकर 'नाम' का व्यापार किया; सतसंग के जरिए ही नाम जपने का शौक पैदा होता है।

मैं बताया करता हूँ कि 'नाम' के बिना जीव बेआसरा है। पिछले कर्म हम मजबूर होकर भोगते हैं, बेबस हैं। आगे के लिए हम आजाद है अपना जीवन जैसा भी चाहें बना सकते हैं। सन्तों के दिए हुए 'पाँच शब्दों' से ही हम अपनी जिदंगी को सफल और पवित्र बना सकते हैं। साथ जाने वाली पूंजी 'नाम' है शब्द है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बिन नामे को संग न साथी मुक्ते नाम ध्यामणया।

यह गुरुओं की दया-मेहर थी कि उन्होंने 'नाम' का आसरा दिया हम डूबने से बच गए हैं।

कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै मांडै हाट।
जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट।।

हम यह तो कह देते हैं कि हमें 'नाम' लिए हुए बहुत समय हो गया है, हमारा कुछ नहीं बना। मुझे बहुत पुराने सतसंगियों से मिलने का मौका मिला है। एक बाबा जयमल सिंह जी का नामलेवा जिसका नाम भी जयमल सिंह था कई बार मेरे पास आकर ठहरता था। महाराज सावन सिंह जी के नामलेवाओं के साथ भी मेरा आम ही जीवन व्यतीत हुआ है जिनकी शिकायत है कि हमारा कुछ नहीं बना लेकिन उन्होंने अपने आपसे कभी यह सवाल नहीं किया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो ऐसी शिकायतें करते हैं वे बकवास से ज्यादा कुछ नहीं करते अगर भजन करें तभी कुछ बनेगा। भजन करने वालो की कोई शिकायत नहीं होती। गुरु तो देने के लिए फिरता है।

कबीर साहब कह रहे हैं परमात्मा ने सन्तों को नाम का हीरा रत्न देकर ही संसार में भेजा है। सन्त संसार में आकर तलाश करते हैं कि कोई हीरे का व्यापार करने वाला है? भगवान हीरा है गुरुमुख उसके बंजारे हैं जिन्होंने व्यापार करके उस हीरे को प्राप्त किया होता है। वे नाम रत्न को मुफ्त ही देने के लिए आते हैं कि हमें भी ऐसा बंजारा मिले जो नाम का व्यापार कर सके!

महाराज कृपाल पच्चीस साल यही कहते रहे, ''देने वाले का क्या कसूर है सवाल तो लेने वाले का है।'' हम सन्तों की रमज को नहीं समझते हम दुनिया के सामान में फँसे हुए हैं। सन्त देह में रहते हुए यह नहीं कहते कि हम भगवान हैं। आप कहा करते थे, ''भगवान आदमी की तलाश में है।'' हम सोचते हैं! शायद भगवान इससे अलग था। बुल्लेशाह ने अंदर जाकर कहाः

शोह तैथों वख नहीं पर वेखन वाली अंख नहीं।

मैं बताया करता हूँ कि 'नाम' गुरु ने पैदा किया होता है, गुरु नामरूप होता है। जो लोग गुरु को पकड़ लेते हैं उनके अंदर राम, रहीम नाम सब कुछ प्रकट हो जाता है।

जब सच्चा शिष्य मिल जाता है तब गुरु उसके आगे सब कुछ रख देता है; वहाँ हीरे का मूल्य पड़ता है। सावन मिला बाबा जयमल ने उनके आगे सब कुछ रख दिया। उन्हें पता लगा कि किस तरह पाँच तत्व के पुतले के अंदर भगवान काम कर रहा है। महाराज सावन की संगत तो बहुत थी लेकिन एक कृपाल मिला जिसने उस हीरे को दुनिया के अंदर चमकाया। कोई ऐसा पहाड़, समुद्र नहीं जहां जाकर आपने सावन का नाम रोशन नहीं किया। महाराज के सतसंगों को पढ़कर पता लगता है आप तो शायद मामूली इंसान थे आपका गुरु बहुत बड़ा था।

जब अजायब बाहर गया उसने कृपाल के बारे में जानकारी दी कि प्यारेयो! सावन-कृपाल में कोई फर्क ही नहीं था। कई प्रेमी मुझे पत्र लिख देते हैं कि अच्छा होता अगर हम महाराज कृपाल के वक्त पैदा होते उनसे 'नाम' लेते क्या हमारा उद्धार हो जाएगा? क्योंकि दिन-रात कृपाल मालिक के गुण गाए जाते हैं।

सन्त अपने आपको छिपाकर रखते हैं। परमात्मा कृपाल के बस में था। वह बना-बनाया परमात्मा लोगों के अंदर रखता था। मैं उन्हें आज भी भरोसा दिलवाता हूँ कि आप उसे गाएं वह आपसे दूर नहीं। वे जब श्रद्धा से बोलते हैं गाते हैं तो **सच्चाई** मुँह चढ़कर बोलती है। सावन-कृपाल उनके रिश्तेदारों तक की भी संभाल करते हैं। वे गवाही देते हैं कि महाराज जी अस्पताल में आए संभाल की। हमारे गुरुदेव हमारे लिए इससे बढ़कर और क्या कर सकते हैं?

हीरा जब जौहरी की दुकान पर जाता है तब उसका मूल्य पड़ता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन ग्राहक गुण बेचिए तो गुण सहगो जाए।
गुण का ग्राहक जे मिले तो गुण लाख बिकाए।

अगर जौहरी मिले वही शब्द की परख करेगा। जब गुरु देव जी महाराज आए तो मैंने आपसे कहा कि मेरा दिल-दिमाग खाली है। मैंने बचपन से दिमाग में दुनिया को जगह नहीं दी। मैं नहीं जानता कि

आपसे क्या सवाल करना है? आपने हँसकर कहा, ''मैं खाली दिल दिमाग की वजह से ही पाँच सौ किलोमीटर चलकर आया हूँ। मेरे पास बहुत पढ़े-लिखे आदमी रहते हैं।''

आप सोचकर देखें! उस समय तो यहाँ पानी का इंतजाम भी नहीं था। आप रेत के टिब्बों में बिना बुलाए ही आए। यह आपकी दया थी। उससे पहले न मैनें उनकी बड़ाई सुनी थी और न ही कोई उनकी निन्दा करने वाला मुझे मिला था। वह दया का पुंज होता है अपने आप ही आ जाता है, दया का सागर होता है जब उछलता है तो किनारे तोड़ देता है।

कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित।
अमरापुर बासा करहु हरि गइआ बहोरै बित।।

कबीर साहब कहते हैं कि आप इस तरह की लगन से सिमरन करें जैसा कि कष्ट पड़ने पर करते हैं फिर देखें! आपको वह अमर जगह परमात्मा का घर मिलेगा।

सुख में सिमरन न किया दुख में किया याद।
दुखी होय दास की कौन सुने फरियाद।

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु एकु रामु।
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु।।

किसी सेवक ने कबीर साहब से सवाल किया कि किसकी सेवा करनी चाहिए? कबीर साहब ने कहा कि दो ताकतें-एक सन्त और दूसरा राम सेवा के काबिल हैं। राम मुक्ति देता है सन्त नाम जपवाता है। राम को किसी ने नहीं देखा आप उसकी सेवा कैसे करेंगे? सेवा जब भी करेंगे किसी जीवित महापुरुष की ही कर सकते हैं। नाम का जपना, भजन-अभ्यास करना ही सेवा है।

बाबा सावन सिंह जी को बहुत से लोगों ने तोहफें देने की कोशिशें की कि आप हमें कोई सेवा बताएं। आपने कहा कि भजन करके लाओ

यही मेरी सेवा है। सन्तों की सेवा 'शब्द-नाम' की कमाई है। सन्त आपको 'शब्द-नाम' की सेवा में लगा देंगे परमात्मा आपको मुक्ति देगा। ये दोनों ताकतें - परमात्मा और सन्त पूजने के काबिल है; सन्त मिलेगा तो परमात्मा मिलेगा।

कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर।
इक अवघट घाटी राम की तिह चड़ि रहिओ कबीर।।

कबीर साहब कहते हैं कि पंडित, भाई कर्मकांड में लग गए तो सारी दुनिया उसी तरफ लग गई। वे पानी बिलोते हैं भले ही उन्हें कुछ मिला या नहीं सभी लोग इस तरफ लग गए हैं। किसी ने यह नहीं देखा कि इससे कुछ प्राप्त होता है या नहीं? भक्ति की घाटी चढ़ना खाला जी का बाड़ा नहीं, इसमें बड़े खतरे हैं। मैं वह घाटी चढ़ा हुआ हूँ परमात्मा से मिल चुका हूँ। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, वही पंडित है जो तीनों गुणों की पंड उतार लेता है रामनाम को हृदय में बसा लेता है।

कबीर दुनीआ के दोखे मुआ चालत कुल की कानि।
तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि।।

बहुत से आदमी नाम लेने के लिए और सतसंग के लिए भी तैयार हो जाते हैं लेकिन वे लोकलाज से बंधे होते हैं कि अगर मैं सतसंग में गया तो पता नहीं समाज के लोग क्या कहेंगे?

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी के समय का वाक्या है कि एक पुजारी किसी खास सभा का मुखिया था वे लोग महाराज सावन सिंह जी की निन्दा गाते थे। वह रात को महाराज सावन सिंह जी के पास आकर कहने लगा कि मुझे लोगों के पीछे लगकर थोड़ी बहुत निन्दा करनी पड़ती है क्योंकि हमारी सोसाइटी है। आप मुझे अकेले को अंदर बिठाकर 'नाम' दे दें। महाराज सावन ने कहा, ''जब तू संगत में आएगा तुझे 'नाम' मिल जाएगा।'' आखिर वह शख्स यहाँ से 'नाम' लेकर गया। वह उस वक्त को पछताता है।

इसी तरह 77 आर. बी. आश्रम में मेरे पास गुरुद्वारे का एक ग्रन्थी आया, उसने कृपाण वगैरहा पहन रखी थी। उसने मुझसे कहा, ''मेरे दिल में बहुत तड़प है अगर आप मुझे अकेले को नाम दे दें मैं नाम लेने के लिए तैयार हूँ।'' मैंने उससे कहा, ''नाम लेने में क्या फर्क पड़ता है तू अपनी कृपाण भी रख गुरुद्वारे का ग्रन्थी भी बन तू अच्छे तरीके से लोगों को बाणी समझाएगा।''

उसने दो महीने सतसंग सुना आखिर 'नाम' लेने के लिए आया। उसने पहले जो चिह्न बनाए हुए थे उन्हें उतार दिया। मैंने उससे पूछा तो उसने कहा कि जब भूले हुए थे तो बाहर चिह्न धारण किए हुए थे। मैंने कहा कि सन्त अंदर **सच्चाई** रख देते हैं अगर आप सच्चाई पसंद हैं तो अपने आप ही उन चिह्न चक्रों को छोड़ देंगे। बुल्लेशाह रोज नमाज पढ़ता था, मस्जिद का मुल्ला था। जब आत्मा अंदर गई तो जो दुआ सलाम पहले करता था वह सब कुछ भूल गया। बुल्लेशाह कहते हैंः

जद् सबक ईश्क दा पढ़या मस्जिद कोलों ज्योड़ा डरया।
वेहड़े वडी जद यार दे ते भुल गई सलाम वालेकुम।

प्यारेआ! तू उस समय कहना कि मेरी समाज वाले शमशान में नहीं जाते मैं वहाँ क्यों जाऊँ? उस समय तेरी लोक लाज कहाँ जाएगी?

कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहुत लोगन की कानि।
पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''देख प्यारेआ! तू लोकलाज को रखता-रखता खत्म हो जाएगा मर जाएगा। आज पड़ोसी के घर मौत हुई है कल तेरे घर भी होगी तू उसे टाल नहीं सकता। सोचकर देख! वहाँ कोई लोकलाज नहीं निभा सकता तो क्या 'शब्द-नाम' की कमाई के लिए, सतसंग में जाने के लिए ही हम लोकलाज से डरते हैं?'' हम कहते हैं कि यह इतना पढ़ा-लिखा है इतना बड़ा अफसर है यह भी साधु सन्तों के पीछे फिरता है। हमें ऐसी लोकलाज लेकर बैठ जाती है।

कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु।
दावा काहू को नही बडा देसु बड राजु।।

जो लोग खाली बैठकर खाते हैं वे गुरु ग्रन्थ साहब की इस तुक से बहुत काम लेते हैं कि कबीर साहब ने भी लिखा है कि बड़ा देश है माँगकर खा लेना कोई गुनाह नहीं लेकिन कबीर साहब कहते हैं कि माँगना है तो परमात्मा के घर जाकर मांगो। परमात्मा आपको 'नाम' की रोटी देगा आपकी आत्मा को तृप्त करेगा।

परमात्मा का देश बहुत बड़ा है आप अंदर जाकर देखें! यह खत्म होने वाला नहीं। उस घर में जाकर माँगें वहाँ आपकी तृप्ति होगी। परमात्मा किसी समाज की पर्सनल जायदाद नहीं। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने ही परमात्मा से मिलना है। औरत-मर्द, गरीब-अमीर कोई भी भक्ति करे वह तृप्त हो सकता है।

कबीर दावै दाझनु होतु है निरदावै रहै निसंक।
जो जनु निरदावै रहै सो गनै इंद्र सो रंक।।

कबीर साहब समाजिक ठेकेदारों से कहते हैं कि परमात्मा सबका है, परमात्मा के ऊपर कोई हक नहीं जता सकता। समाजों के यही झगड़े हैं एक समाज कहता है कि परमात्मा हमारा है वह इस तरीके से मिलता है। दूसरा समाज कहता है कि हमारा तरीका ठीक है, यही लड़ाई-झगड़े का घर है। दादू साहब कहते हैंः

दादू दावा दूर कर बिन दावे दिन कट।
केती सौदा कर गई इस पंसारी के हट।

दादू साहब फिर कहते हैं कि किस तरह का निंदावा करना है? मन की ईर्ष्या को दूर करें। सन्त सबको मिलाकर बिठाते हैं।

मन की दुविधा दूर कर सौदा कर ऐसा।

कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु।
भाग बडे तै पाइओ तूं भरि भरि पीउ कबीर।।

कबीर साहब कहते हैं, ''परमात्मा ने सन्त-सतगुरु को बहुत बड़े नाम का समुद्र देकर भेजा है लेकिन हम बिना भाग्य उनसे फायदा नहीं उठा सकते, सोचते ही रह जाते हैं। मेरे ऊँचे भाग्य थे मैं प्याला पीकर तृप्त हूँ। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं वही यहाँ से फायदा उठा सकते है।''

कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु।
ए दुइ अखर ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु।।

कबीर साहब प्यार से इस शरीर के मुत्तलिक बताते हैं, ''इस शरीर की कितनी कीमत है यह कितना मजबूत है? जैसे रात को तारे निकलते हैं सुबह छिप जाते हैं समय नहीं लगाते इसी तरह वक्त आने पर सब कुछ समाप्त हो जाता है। यह शरीर भी पल-पल खिन्न होता जा रहा है वक्त आने पर मौत इसे भी खत्म कर देती है। आप राम परमात्मा की भक्ति करें उसे न भूलें। गुरु ने आपको 'शब्द-नाम' पकड़ाया है वह थिर है आप उसे न छोड़ें, आप भी थिर होकर परमात्मा से जा मिलेंगे।''

किसी ने गुरु गाविंद सिंह जी से सवाल किया कि संसार में कौन थिर रहता है? आप कहते हैंः

नाम रहयो साधु रहयो, रहयो गुरु गोविन्द।
कहो नानक इस जगत में जिन जपयो गुरु मंत्र।

प्यारेयो! जो 'नाम' की कमाई करेगा वह परमात्मा रूप हो जाएगा। परमात्मा ही थिर रहता है। परमात्मा आदि-जुगादि से चला आ रहा है। जो परमात्मा की भक्ति करेगा वह भी थिर हो जाएगा। हमें भी चाहिए 'शब्द- नाम' की कमाई करें अपने जीवन को सफल बनाएं।

❋❋❋

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को भजन पर बिठाने से हिदायतें

ध्यान

मन को शान्त करें, शान्त मन ही भजन-अभ्यास कर सकता है। भजन-अभ्यास को बोझ न समझें। अपने मन को बाहर भटकने की इजाजत न दें और भजन करते समय बाहरी आवाजों की तरफ **ध्यान** न दें, अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच लाएं।

जब हम प्यार से सिमरन करते हैं और अपने **ध्यान** को दोनों आँखों के बीच ले आते हैं तब आत्मा को कमजोर करने वाली शक्तियों की डोर टूटनी शुरू हो जाती है; हमारी आत्मा मुक्त हो जाती है। जब हम अपने ध्यान को आँखों के बीच केन्द्रित करके प्यार से सिमरन करते हैं तो हम मन के पंजो से ऊपर उठ जाते हैं।

जब हम आँखों के बीच रहने की आदत बना लेते हैं, प्यार से सिमरन करते हैं तब हमारी आत्मा ऊपर की ओर उठती है और हमारी आत्मा का मध्य भाग चमक जाता है। हम बहुत देर तक अंदर रहकर सुंदर ज्योति देख सकते हैं।

अभी हम प्यार से सिमरन नहीं कर रहे और अपने ध्यान को आँखों के बीच नहीं टिका पा रहे इसलिए हमारा **ध्यान** गिर जाता है और हमें दुनिया की चिंता सताती है लेकिन जब हम प्यार से सिमरन करते हैं तब दुनियावी सोचें एक-एक करके हमारे अंदर से दूर हो जाती हैं और उस जगह सिमरन आ जाता है।

हो सकता है! हम शब्द सुन रहे हों लेकिन वह शब्द हमें ऊपर की ओर नहीं खींच रहा क्योंकि काल की शक्तियाँ - *काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार* हमें नीचे की तरफ गिरा रही हैं इसलिए आत्मा शब्द को नहीं सुन रही। जैसे लोहे को चुम्बक के पास रखा जाए तो चुम्बक उसे खींच लेता है अगर लोहे का टुकड़ा चुम्बक के नजदीक नहीं या उस लोहे के टुकड़े पर जंग लगा हुआ है तो इसमे चुम्बक का क्या दोष है?

हमारी आत्मा शुद्ध नहीं, शब्द के दायरे में नहीं तो उसे शब्द किस तरह अपनी ओर खींच सकता है? इसलिए जरूरी है कि हम अपने **ध्यान** को आँखों के बीच लाकर प्यार से सिमरन करें। सतसंगी को रोजाना का भजन-अभ्यास नहीं छोड़ना चाहिए अगर आप एक दिन अभ्यास नहीं करते तो उस दरार को भरने के लिए आपको तीन-चार दिन से भी ज्यादा दिन लग सकते हैं। हम दुनिया के बारे में बहुत सोचते हैं अगर आप रोजाना चार या पाँच घंटे अभ्यास करते हैं तो भी दुनियावी पलड़ा भारी रहता है।

सतसंगी को नियमित अभ्यास करना चाहिए। सतसंगी को अपने मन का बहुत ख्याल रखना चाहिए। सतसंगी का जीवन दुनियावी लोगों से अलग होना चाहिए। आप याद रखें कि यह इंसानी जामा आखिरी मौका है। आप आखिरी बार इस दुखी दुनिया में आए हैं। गुरु की दया से आपने अपने असली घर, सच्चे घर वापिस जाना है इसलिए आप मजबूत होकर अपने मन की चौंकीदारी करें।

महाराज कृपाल ने हमें डायरी भरने के लिए कहा है। डायरी अपने जीवन को बनाने का और मन की ताकतों पर काबू पाने का सबसे मजबूत तरीका है। अब आप प्यार से सिमरन करें। ❋❋❋

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि जब तक प्रेमी के अंदर साँस है वह सेवा करता है और प्रीतम के साथ मिलकर रहना चाहता है; दिन-रात प्रीतम की प्यार भरी लगन में जागता रहता है।

जिच्चर अंदर सांस तिच्चर सेवा कीचे जाए मिलिए राम मुरारी।
अंदर जागत रह दिन राति अपने पिर प्रीत प्यारी।

प्रेमी को प्रीतम के दर्शनों से जो सुख होता है वह बयान नही किया जा सकता। गुरु रामदास जी फरमाते हैं कि अंदर गुरु प्रीतम से सच्चा प्यार लग जाने पर उसे सामने देखकर तन-मन निहाल हो जाता है, गुरु रूपी राम मन को मोह लेता है। उसके नूरी जमाल की झलक की वजह से सुध-बुध बिसर जाती है और प्रेमी लोटपोट हो जाता है।

अंदर सच्चा न्यों लाया प्रीतम आपणे।
तन मन होया निहाल जां गुरु देखां सामने।

राम गुरु मोहन मोह मन लइए।
हौं आकल बिकल भई गुरु देखे लोटपोट होय पईए।

प्रेमी की आँखे प्रेम में कसी रहती हैं, हरि और हरि के नाम को देखती रहती हैं अगर वह आँखें उसको छोड़कर किसी और को देखती हैं तो उन आँखों को निकाल देना चाहिए।

अँखी प्रेम कसाईयां हरि हरि नाम पिखन्न।
जेकर दूजा देखदे जन नानक कड दे चन्न।

पलटू साहब प्रेमी की अवस्था को इस तरह बयान करते हैं :

अम्मा मेरा दिल लगा मुझसे रहा न जाए।
मुझसे रहा न जाए बिना साहब के देखे।

जान तसदत करो लगो साहब के लेखे।
मुझको क्या है रोग जाएगा जीव हमारा।
एकह दारू यही मिला जब प्रीतम प्यारा।
पड़ा प्रेम जंजाल जेकर सीने में लागी।
मैं गिर पड़ी बेहोश लोक की लज्जा भागी।
पलटू सतगुरु वैद्य बिन कौन सके समझाए।

ईश्क एक प्रज्वलित अग्नि है जिसमें जलना हर एक का काम नहीं, यह किसी विरले प्रेमी का ही काम है। हाफिज साहब आतुर होकर मुर्शिद के आगे पुकार उठे, ''हे मुर्शिद! ईश्क इलाही की शराब के प्याले की तरफ गौर कर क्योंकि ईश्क पहले आसान मालूम होता है लेकिन बाद में सख्त हो जाता है। कोई ऐसी सूरत पैदा कर कि प्रीतम का जल्वा हकीकी नजर आने लगे क्योंकि ईश्क के दर्दमंद का ईलाज सिवाय प्रीतम के दीदार के और कुछ नहीं।''

ईश्क की राह में बड़े खतरे हैं इस पर चलना किसी ऐरे-गेरे या लोभी का काम नहीं। जैसे पानी से मारी हुई खेती पानी से ही हरी होती है इसी तरह ईश्क का गम ईश्क की मग्नताई से दूर होता है। मुर्शिद से विनती है कि वह बेखुदी के आलम में पहुँचा दे जहाँ सारे फिक्र और लोक-परलोक के संबंध गुप्त हो जाते हैं। यह याद रखने वाली बात है कि यहाँ जिस ईश्क का जिक्र हो रहा है यह वह ईश्क नहीं जो आम दुनिया नफसानी ख्वाहिशों को पूरा करने को कहती है।

मौलवी रूम साहब फरमाते हैं, ''यह वह ईश्क नहीं जो आदमियों में आमतौर पर देखने में आता है। यहाँ उस ईश्क से मुराद है जिसे ईश्क इलाही कहते हैं; यह इंसान का आर्दश है।''

प्रेमी को प्रीतम प्यारा है वह उसी को लोचता है, वह उसी का पुजारी है उसे छोड़कर और कोई उसकी नजर में नहीं समाता। वह हरदम उसे देखने का प्यासा है, उसके बिना एक घड़ी भी जी नहीं सकता। उसे अनेक पदार्थ दे दें पर उसकी प्रीतम से मिलने की भूख नहीं उतरती। उसकी रग-रग और मन में प्रीतम का प्रेम समा रहा है।

मेरा अंतर भुख न उतरे माली जे सो भो जन मे नीरे।
मेरा मन तन प्रेम प्रेम का बिन दर्शन क्यों मन धीरे।

वह प्रीतम के दर्शन के लिए मिन्नतें करता है कि हे प्रीतम! अगर तू मेरा प्रीतम है तो मुझे अपने आपसे एक क्षण के लिए भी न बिछोड़। मेरी जिंदगी तेरे साथ लगकर घायल हो चुकी है, तेरे दीदार कब होंगे? हे प्रीतम! मैंने सारी दुनिया अच्छी तरह ढूढ़ी है लेकिन तेरे जैसा और कोई नहीं है। तू आकर मेरे मुँह लग जिससे मेरे रोम-रोम और मन को ठंडक पहुँचे। दुनिया में सिर्फ तू ही मेरा सज्जन है। मैं शीश उतारकर तेरे दर पर गिरता हूँ मेरे नयन तुझे देखने के लिए तरस रहे हैं। तेरे दर्शन के लिए अंदर अंधेरियां चल रही हैं।

जे तू मित्र असाडड़ा हिक भौरी न बिछोड़।
जिओ महंजा तो मोहया कद पसी जानी तोहे।

डिड्डी हब ढ़िढ़ोल हिकस बाझ न कोए।
आओ सज्जन मुख लग मेरा मन तन ठंडा होए।

तू जो सज्जन मेंडया डेईं सीस उतार।
नैन मेहंज तरसदे कद पेसी दीदार।

उठी झालू कंतड़हो पेसी तो दीदार।
काजल हार तंबोल रस बिन पसे हब रस शार।

प्रेमी प्रीतम के प्रेम में घायल हो जाता है वह और कहाँ जाए? मछली पानी का विछोड़ा सहन नहीं कर सकती उसके बिना मर जाती है। प्रेमी का जीवन ही प्रीतम है वह उसे छोड़कर मुर्दा है।

गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं कि हे मन! हरि के चरणों में समा जा। मेरा मन तो उसके दर्शनों की प्यास में आतुर हो रहा है। हे प्रीतम! मैं उड़कर तुझसे आ मिलूं।

हरि प्रेम भक्तजन वेदया से आन कत जाही।
मीन विछोहा न सहे जल बिन मर पाही।

शेष अगले अंक में.....

धन्य अजायब

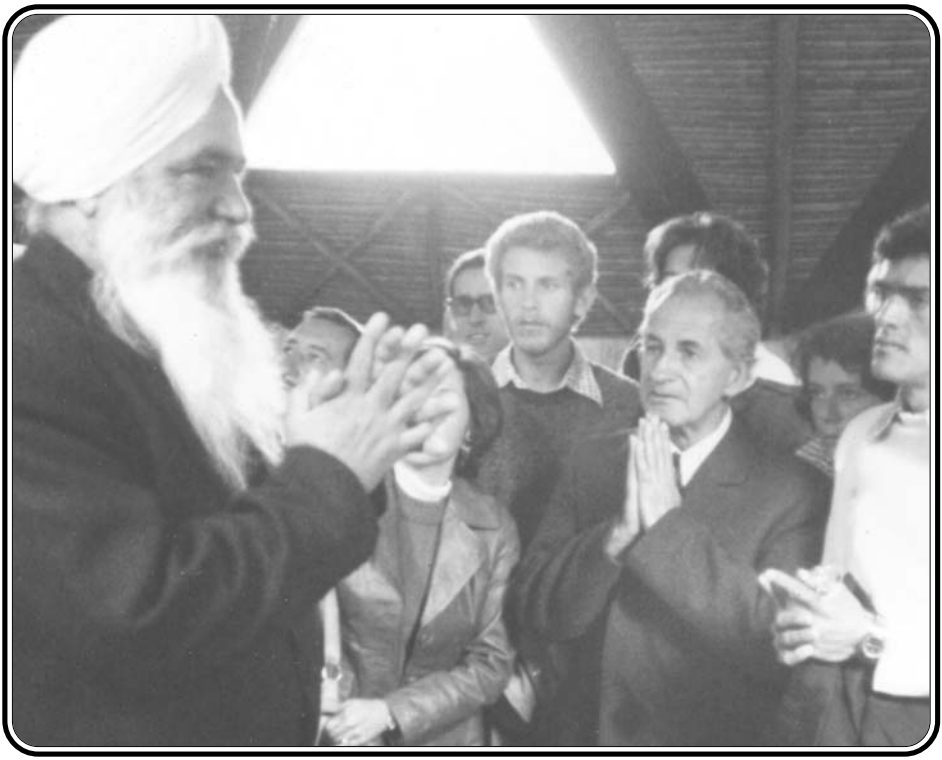

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम

07 से 11 सितम्बर 2010

29 से 31 अक्टूबर 2010

26 से 28 नवम्बर 2010

24 से 26 दिसम्बर 2010